पटेल

पटेल

लेखक
सुरेन्द्रकुमार

पटेल

भूमिका

इतिहास पर हम जब भी अपनी दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि भारत भूमि पर समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने भारतवर्ष का शीश कभी झुकने नहीं दिया। इन बड़े नेताओं तथा देशभक्तों ने अपने बलिदान और कर्तव्य से भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराया।

परिचय—ऐसे ही एक देशभक्त ने ३१ अक्टूबर, १८७५ ई० को भारत भूमि पर जन्म लिया। बालक का नाम वल्लभ भाई पटेल रखा गया। बालक के माता-पिता गुजरात के पटेलाद तालुका के गाँव कमरसद के निवासी थे।

गुजरात में कुरमी जाती की दो उपजातियाँ लवा और कदवा हैं। ये अपने को श्री रामचन्द्र के पुत्र लव और कुश के वंशज बताते हैं।

पटेल के पिता का नाम ज्वेरभाई था। यह एक साधारण कुरमी किसान थे। ये खेती-वाड़ी करके अपना काम चलाते थे। पटेल को भी कभी-कभी ये अपने साथ ले जाते थे।

वालक अपने पिता के काम में हाथ वटाता था और अपने पहाड़े भी वहीं याद करता था।

एक दिन पिताजी हल चला रहे थे। पटेल उनके पीछे अपना काम करते हुए पहाड़े भी स्मरण कर रहे थे। बालक पहाड़े याद करने में इतना मग्न था कि उसके पैर में डाब का काँटा चुभ गया तो भी उसे पता नहीं चला। वह अपना काम करते हुए निरन्तर आगे वढ़ रहा था।

अचानक पिता की दृष्टि वालक के पैर की ओर गई। पैर से रक्त निकलता देख करके वे दंग रह गए। पिता ने वालक की दृढ़ता को सराहा और पुत्र के पैर में से काँटा निकालकर के उसपर काड वृक्ष की पत्तियाँ रगड़ दीं, जिससे खून वहना वन्द हो गया।

पिता ने पुत्र को महान व्यक्ति वनने का आशीर्वाद भी दिया।

पटेल के पिता ज्वेरभाई भी वड़े देशभक्त थे। कहते हैं जव १८५७ में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था तो

ज्वेराभाई ने अपना हल और फावड़ा फेंक दिया था और महारानी झाँसी के पास युद्ध में भाग लेने चले गए थे। जब इनका विद्रोह असफल हो गया तो ज्वेरभाई अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर घूमते फिरते थे। इन्होंने भी युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई थी। अन्त में ये पकड़े गये और इनको जेल में डाल दिया गया। इन्दौर के राजा मल्हार राव ने उनको अपने राज-भवन में कैद कर लिया।

एक दिन मल्हार राव जेल के समीप बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। जेल की सलाखों से ज्वेरभाई भी बड़े ही ध्यान से शतरंज देख रहे थे। खेल के बीच राजा एक ऐसी चाल चलने लगा जिससे उसकी हार निश्चित थी। ज्वेरभाई ने राजा को टोक दिया और दूसरी चाल चलने को कहा। राजा ने उसका कहना मान लिया और राजा जीत गया। राजा ज्वेरभाई की योग्यता पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे जेल से छोड़ने की आज्ञा दे दी। तीन साल बाद वह अपने गाँव वापिस आए।

पटेल के बड़े भाई का नाम विट्ठलभाई पटेल था। पटेल की माँ धार्मिक विचारों वाली थी।

शिक्षा

गांव में सातवीं कक्षा तक गुजराती में ही पढ़ाई होती थी। पटेल ने भी अपने गांव के स्कूल में ही पढ़ना आरम्भ किया। पटेल को यह स्कूल पसन्द नहीं था। वे किसी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ना चाहते थे। इन्होंने सातवीं श्रेणी पास कर ली। इसके उपरान्त पांचवीं श्रेणी तक अंग्रेजी भी एक प्राइवेट स्कूल में पास की। अब पटेल का मन इन विद्यालयों से ऊब गया था। अत. वे पटेलाद ताल्लुका में आ गए और वहीं पर अपनी पढ़ाई आरम्भ कर दी।

पटेल ने अपना जीवन अत्यन्त ही सादगी से आरम्भ किया। पटेल भाई पढ़ाई में अपना अधिक नाम नहीं कर सके। पटेल अपने गांव कमरसद से एक सप्ताह का भोजन लेकर के

पटेलाद जाते थे। गांव से यह पैदल ही पटेलाद पहुँचते थे। गाड़ी में नहीं जाते थे और इस तरह इन्होंने बचत करना भी बचपन में ही सीख लिया था।

अब पटेल भाई ने नड़ियाद हाई स्कूल में पढ़ना शुरू कर दिया। स्कूल में ये विद्यार्थियों के नेता बन गए। यदि कोई अध्यापक कोई अनुचित कार्य करता तो यह सहन नहीं करते थे और स्कूल में तुरन्त ही हड़ताल करवा देते। विद्यार्थियों की भलाई के लिए ये जान देने को तय्यार रहते थे।

एक बार स्कूल में एक अध्यापक ने एक बालक को थोड़ी-सी भूल के कारण स्कूल से निकलवा दिया। पटेल को जब यह पता चला तो उन्हें क्रोध हो आया और उन्होंने स्कूल में हड़ताल करवा दी। हड़ताल कई दिन चली। अन्त में अध्यापक ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और पटेल ने भी हड़ताल समाप्त कर दी। इस घटना से पटेल को विद्यार्थी अपना सरदार मानते थे। इसके उपरांत एक घटना और घटी।

नड़ियाद स्कूल के अध्यापक ने स्कूल में पुस्तकों की एक दुकान खोल रखी थी। विद्यार्थियों पर यह अध्यापक पुस्तकें खरीदने के लिए अनुचित दबाव डाला करता था। सरदार पटेल को यह अन्याय सहन नहीं हुआ। पटेल ने हड़ताल करवा

दी। अध्यापक को झुकना पड़ा और अन्त में अपनी दुकान भी वन्द कर देनी पड़ी।

वड़ौदा हाई स्कूल में

अव पटेल नड़ियाद हाई स्कूल छोड़कर करके वड़ौदा के हाई स्कूल में प्रविष्ट हो गए। पटेल को संस्कृत कठिन लगती थी अतः इन्होंने गुजराती भाषा ही पढ़ना उचित समझा।

उस समय श्री छोटे लाल गुजराती पढ़ाते थे। इनको संस्कृत वड़ी प्रिय थी। उनकी इच्छा थी की विद्यार्थी संस्कृत पढ़ें। जब पटेल स्कूल में दाखिल हुए तो उन्होंने पटेल से कहा, "आइए महापुरुष ! आप संस्कृत छोड़कर गुजराती ले रहे हैं लेकिन संस्कृत के विना गुजराती शोभा नहीं देती।" संस्कृत के उन्होंने कई लाभ भी गिना दिए।

यह सुनकर पटेल तनिक भी नहीं घवराया और उसने तुरन्त ही उत्तर दिया, "यदि सभी विद्यार्थी संस्कृत ही पढ़ने लगे तो फिर आप गुजराती किसको पढ़ाएँगे।" गुरु जी को यह उत्तर सुनते ही क्रोध आ गया। वालक को पिछली वेंच पर खड़ा होने का दण्ड भी सुना दिया गया। मास्टर जी ने पटेल को शरारती वालक समझ करके तंग करना आरम्भ कर

दिया। उनके तंग करने का भी ढंग निराला ही था। वह प्रतिदिन पटेल को घर से पहाड़े लिख करके लाने के लिए कहने लगे।

कुछ दिनों तक तो पटेल यह सजा चुपचाप सहन करते रहे। प्रतिदिन पहाड़े लिख कर के लाने की आज्ञा अब उन्हें असह्य हो गई थी। उन्होंने इसका विरोध करने की योजना बनाई।

गुजराती में पहाड़े शब्द को पाड़े भी कहते हैं जिसका अर्थ गाए-भैंस का बच्चा भी होता है।

एक दिन मास्टर ने पूछा, "पाड़े लिखकर के लाए हो या नहीं।" पटेल ने उत्तर दिया, "मास्टर जी, पाड़े लाया तो था परन्तु वे स्कूल के दरवाजे पर ही भिड़कर के भाग गए।" मास्टर को पटेल के उत्तर पर बहुत क्रोध हो आया। मास्टर ने दूसरे दिन के लिए घर से दो सौ पहाड़े लिखकर के लाने के लिए आज्ञा दे दी।

बालक दूसरे दिन स्कूल आया। मास्टर साहब ने पहाड़े दिखाने को कहा। पटेल ने तुरन्त अपनी कापी आगे बढ़ा दी। उस पर लिखा था दो सौ पहाड़े।

मास्टर का पारा गर्म हो गया। उन्होंने तुरन्त ही पटेल

की शिकायत प्रधानाध्यापक के पास कर दी। मुख्याध्यापक ने आप को बुलाया और आप से घटना का विवरण पूछा। पटेल ने पूरी कथा साफ-साफ सुना दी। आपको कुछ सजा न मिली। आप के और मास्टर के बीच एक दरार पड़ गई।

ठीक इसके तीन मास बाद वल्लभ भाई एक दूसरे शिक्षक से टकरा गए। फिर शिकायत प्रधानाध्यापक के पास गई। मुख्याध्यापक ने पटेल को स्कूल से निकालने का आदेश दे दिया।

अब पटेल नड़ियाद आ गए। अब पटेल की आयु लगभग २२ वर्ष की थी। यहीं रहकर के इन्होंने किसी तरह मैट्रिक की परीक्षा पास की। क्योंकि पढ़ने-लिखने में पटेल होशियार नहीं थे।

पटेल के पिता धनी नहीं थे। अतः वे पटेल को आगे पढ़ाने में असमर्थ थे। पटेल भी और पढ़ना नहीं चाहते थे। उनकी इच्छा तो बैरिस्टर बनने की थी। अतः उन्होंने अपने कदम इसी लक्ष्य की ओर बढ़ाने शुरू कर दिए।

पटेल विद्यार्थी जीवन में ही अंग्रेजी की ओर आकर्षित होने लगे थे। उनको यह आभास हो गया था कि अंग्रेज बहुत अच्छे तथा अकलमन्द व्यक्ति हैं। वे उन के देश में

जा करके पढ़ने को लालायित होने लगे। परन्तु पटेल के पास धन नहीं था अतः वे विवश हो गए। उनके हृदय में विलायत जा कर के बैरिस्टरी की शिक्षा पास करने की प्रबल इच्छा थी। परन्तु वे कहीं से भी पैसे का प्रबन्ध करने में असमर्थ रहे और उन्होंने अब दृढ़ निश्चय किया कि वह स्वयं धन कमाकर के ही विलायत पढ़ने के लिए जाएगा।

अब पटेल को धन कमाने की चिन्ता सवार हुई। वे अपने मित्र काशी भाई के यहाँ आ गए और अपनी योजना को कार्य रूप में परिवर्तित करने लगे।

अपने मित्र के यहां रहते हुए पटेल की कांख में एक फोड़ा हो गया। बहुत इलाज किया गया परन्तु फोड़ा ठीक नहीं हुआ। अन्त में यह निश्चित हुआ कि फोड़े को चीरा लगवा दिया जाए। नाई आया। नाई ने चीरा लगाने से फोडे को गरम सलाखों से जालना ठीक बताया। सलाखें गर्म की गईं। नाई फोडे को जलाने से घबरा गया। पटेल ने यह भांप लिया और उसने गर्म सलाखों से स्वयं ही फोड़े को जला दिया। सरदार इससे तनिक भी नहीं घबराए। देखने वाले पटेल की सहन शक्ति को देख कर के हैरान हो गए।

अपने मित्र काशी भाई के पास रहते हुए इन्होंने मुखातारी

पास कर ली और गोधरा में ही वकालत करने लगे। इनके भाई विट्ठल भाई भी गोधरा में ही वकालत करते थे और कुछ समय पूर्व ही वे बोरसद गए थे। सरदार ने उनकी जान-पहचान का भी लाभ उठाया। विट्ठल भाई ने सरदार को अपने पास आने का संदेश भेजा परन्तु पटेल नहीं गए। गोधरा में सरदार के पास कुछ भी सामान नहीं था। अतः इन्होंने कर्ज ले करके थोड़ा-थोड़ सामान इकट्ठा किया और बड़ी तंगी के साथ अपने जीवन की शुरुआत की।

इन्हीं दिनों गोधरा में प्लेग फैल गया। कचहरी के किसी क्लर्क के लड़के को भी प्लेग ने दबा दिया। उसको बुखार के साथ-साथ एक गिल्टी भी निकल आई। पटेल ने उस लड़के की दिन-रात सेवा की परन्तु लड़का बच नहीं सका।

सेवा करते-करते पटेल को भी प्लेग हो गया परन्तु भगवान की कृपा से पटेल शीघ्र ही ठीक हो गए।

जब सरदार को प्लेग हो गया तो उन्होंने अपनी पत्नी को कमरसद भेज दिया। पति तो ठीक हो गए परन्तु पत्नी को प्लेग हो गया।

सरदार को पत्नी की बीमारी का पता चला तो वे उसे गांव से इलाज के लिए बम्बई ले आए। सरदार पत्नी को

वम्बई छोड़ कर के स्वयं गोधरा आ गए। पटेल पत्नी की बीमारी से दुःखी थे। परन्तु सरदार एक केस लड़ रहे थे अतः उन्होंने लोगों को जिनका मुकदमा लिया था भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ा। उनके मुकदमें के लिए पटेल को वरावर वम्बई से गोधरा आना पड़ता था।

एक दिन जब मुकदमें की सुनवाई हो रही थी तो उन्हें एक तार मिला। तार को पढ़कर उन्होंने चुपचाप उसे अपनी जेव में रख लिया और मुकदमें की सुनवाई होती रही। अदालत समाप्त होने पर ही उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु के तार के वारे में वताया।

थोड़े दिन गोधरा रहने के वाद पटेल वोरसद आ गए। यहाँ पर फौजदारी के मुकदमे अधिक होते थे। यही पर इन्हें मनुष्यों के विचित्र स्वभावों का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो गया। ये वाल की खाल निकालने तथा जिरह करने में बड़े-वड़ों के कान काटने लगे थे। इनकी दलीलों को सुन कर सभी दंग रह जाते थे। पुलिस के अफसर भी इनसे घवराते थे। एक अंग्रेज मजिस्ट्रेट जिसका नाम हस्वेण्ड था लोगों को वहुत तंग किया करता था। पटेल ने अपनी कानूनी योग्यता से उसको इतना तंग किया कि वह सदैव के लिए सुधर गए।

सरदार बीमार हो गए और उनके स्थान पर पटेल के भाई मुकदमे की पैरवी करने गए। इनके साथ सरकारी वकील की कुछ झड़प हो गई। मजिस्ट्रेट ने अभियुक्त को छः मास की सजा सुना दी। विट्ठल भाई के विरुद्ध अपने फैसले में मजिस्ट्रेट ने कड़ी आलोचना भी की।

सरदार को जब यह पता चला तो उन्हें दुःख हुआ। शीघ्र ही स्वस्थ होने पर सरदार ने सेशन जज के यहाँ इस मामले के निर्णय के विरुद्ध अपील कर दी। शीघ्र ही अपील की सुनवाई हुई। सरकारी वकील ने बताया कि अभियुक्त को पहले भी ६ मास की सजा हो चुकी है। यह उल्लेख उसने चार्ज शीट पर से जज को बताया। सफाई बैरिस्टर यह सुनकर चुप हो गए। जज ने इसका जवाब मांगा तो उनसे कुछ भी उत्तर नहीं बन पड़ा। अभियुक्त का भविष्य खतरे में था। सरदार ने कुछ देर सोचा, फिर अदालत में खड़े होकर के अदालत से अभियुक्त को पहले सजा होने का प्रमाण मांगा और उसे दिखाने की जज से प्रार्थना की। जज ने प्रमाण दिखाने का आदेश दिया। सरदार ने प्रमाण देखा तो हैरान हुआ।

सरदार ने प्रमाण देख करके जज को बताया, कि अपराधी को तीस साल पहले ६ मास की सजा हुई थी। इसके बाद ज

का ध्यान चार्ज शीट की इस बात की ओर दिलाया गया कि चार्ज शीट में अपराधी की उम्र ३० वर्ष लिखी हुई है। अदालत में बैठे लोग यह सुनकर के हंस पड़े। सरकारी वकील के हाथों के तोते उड़ गए। सरदार ने सबकी कड़ी आलोचना की और अपने भाई के ऊपर की गई आलोचना को भी उसने रद्द करवा दिया। और अभियुक्त भी रिहा करवा दिया गया। आलोचना में सुपरिण्टेण्डेण्ट को भी नहीं छोड़ा गया और उसे अपने पद से त्याग-पत्र देना पड़ा।

इसी तरह सरदार ने कई और दिलचस्प मुकदमों की पैरवी करके लोगों को न्याय दिलाया।

अब सरदार ने अपनी धाक चारों ओर जमा ली थी। सरदार के पास काफी धन भी हो गया था। अब उन्हें अपनी आकांक्षा पूर्ण होती हुई दिखाई दी। अब वे बैरिस्टरी पास करने के लिए विलायत जाने की सोचने लगे।

विलायत जाने के लिए आपने एक कम्पनी से पत्र-व्यवहार भी किया। कम्पनी का एक पत्र संयोग से बड़े भाई के हाथ में पड़ गया। पत्र पढ़ करके उनके मन में भी विलायत जाने की इच्छा उत्पन्न हो गई। इन्होंने पटेल से कहा, "मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ अतः तुम मुझे विलायत जाने दो, जब मैं पढ़ करके

वापिस आ जाऊँगा, तब तुम विलायत चले जाना। यदि मैं अब नहीं गया तो फिर कभी भी न जा सकूँगा।"

सरदार पटेल ने अपने बड़े भाई की बात मान ली और इससे एकमत हो गए कि पहले विट्ठल भाई ही विलायत जाएँ। जब वे वापिस पढ़ कर आ जाएँगे तब पटेल विलायत चला जाएगा।

पटेल ने अपने भाई की बात ही नहीं मानी बल्कि उनको विलायत में खर्च भेजने की ज़िम्मेवारी भी ले ली।

विट्ठल भाई घर में बिना बताए ही विलायत चले गए। पटेल जब बोरसद वापिस लौटे तभी सबको विट्ठल भाई के जाने का समाचार ज्ञात हुआ।

पटेल की वकालत इस समय पूरे ज़ोर पर थी। पानी की तरह पैसा आ रहा था। सरदार को अब कोई चिन्ता नहीं थी।

विट्ठल भाई लगभग तीन वर्ष तक विलायत में रहे। पढ़ाई समाप्त करने पर वे वापिस आ गए। इन्होंने बम्बई में अपनी वकालत शुरू की और सपरिवार वहीं रहने लगे।

अब पटेल ने भी विलायत जाने की तैयारी कर ली। इस ने अपने विदेश गमन के बारे में किसी को भी नहीं बताया।

सभी तैयारी उन्होंने पहले ही कर ली थी। अपने बच्चों के पालन-पोषण का भार उन्होंने छोटे भाई काशी भाई को सौंप दिया था। १० अगस्त, १९१० को वे विलायत के लिए रवाना हो गए।

लन्दन पहुंचकर के इन्होंने अपने रहने का ढंग बदल दिया। कांटे-छुरियों का भी भोजन करते समय प्रयोग करने लगे। कुछ पश्चिमी सभ्यता का भी इनपर प्रभाव पड़ा।

यह यहाँ पर मिथिल-टेम्पुल में पढ़ने लगे। यहाँ पर इन्होंने मिथिल-टेम्पुल का पुस्तकालय जो इनके घर से ११ मील दूर था, वहाँ जाकर के यह दिन भर पढ़ा करते। दिन मे इन्होंने १७-१७ घंटे तक भी पढ़ाई की। भोजन करने का भी इनको ध्यान नही रहता था। वहो पर ये अपने लिए दूध-रोटी मंगा लिया करते थे। कभी-कभी पढ़ने में ये इतने मग्न हो जाते कि इनको पुस्तकालय के बन्द होने के समय का भी ध्यान नहीं रहता था। जब चपरासी आकर के इनको बताता कि पुस्तकालय के बन्द होने का समय हो गया है तब कहीं जा कर के ये अपना सामान उठाते थे और पैदल ही अपने निवास-स्थान को रात के समय वापिस आते थे। पैदल चलने का इन को प्रतिदिन अभ्यास हो गया था और इससे इनका स्वास्थ्य

भी ठीक हो गया था।

परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि यह शीघ्र ही अपने लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगे।

बैरिस्टरी की परीक्षा इन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। परीक्षक इनके प्रश्नों के उत्तरों से बहुत प्रभावित हुआ और इनकी बड़ी प्रशंसा की। सरदार को ५० पौंड का वज़ीफा मिला और इनकी फीस भी माफ कर दी गई।

इनकी योग्यता को देखकर के एक परीक्षक ने इनको कोई ऊँचा पद देने की भी सिफारिश की।

भारतवासियों ने भी इनको काफी मान दिया।

इंगलैंड में इन्होंने अपना जीवन पूर्ण सादगी से बिताया। वहाँ इनके रहने का ढंग पूर्णतया भारतीय ही रहा। इन्होंने अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया। पास होने पर ये दूसरे देशों के भ्रमण के लिए नहीं गए। इसके पश्चात् इन्हें दुबारा विदेश जाने का भी अवसर नहीं मिला।

सरदार अत्यन्त ही सहनशील व्यक्ति थे। जब ये लन्दन में थे तो एक विद्यार्थी ने इनसे ७५ पौंड उधार ले लिए थे। जब पटेल ने रुपया वापिस माँगा तो आपस में कहा-सुनी हो गई। विद्यार्थी ने पटेल के साथ अशिष्ट व्यवहार किया और सरदार

से वह नाराज हो गया और उनसे बोलना तक बन्द कर दिया। सरदार जब वापिस आ गए तो उस विद्यार्थी ने रुपए वापिस भेज दिए और अपने व्यवहार के लिए क्षमा भी माँगी।

इसी प्रकार सरदार की सहन शक्ति का एक और उदाहरण सामने आया है।

सरदार जिस मकान में रहते थे, एक दिन नहाते समय इनका पाँव फिसल गया। बाद में इनको बुखार तथा पैर में दर्द मालूम हुआ। पटेल एक नर्सिंग होम में प्रविष्ट हो गए। वहाँ पर इनको कोई आराम नहीं हुआ। पैर का दर्द बढ़ रहा था। नर्सिंग होम के डाक्टरों ने सरदार को पैर कटवाने के लिए कहा परन्तु सरदार इसके लिए राजी नहीं हुए।

सरदार ने उस सर्जन की चिकित्सा छोड़ दी और डाक्टर बी०टी० पटेल नाम के एक प्रोफेसर ने इनकी पूर्णतया जाँच की। इनको दुबारा आपरेशन करवाने की सलाह दी। पटेल को [illegible] भी कहा कि वे बिना बेहोशी की दवा लिए आपरेशन [illegible] तो ज्यादा अच्छा रहेगा। पटेल ने उनकी [illegible] बिना बेहोश हुए ही आपरेशन करवा लिया। [illegible] शक्ति को देखकर के डाक्टर भी दंग रह [illegible]।

पटेल विलायत से २३ फरवरी १९१३ [illegible]

पहुँचे। इन्होंने बम्बई में अपनी वकालत शुरू नहीं की। ये अहमदाबाद आए और यहीं पर इन्होंने अपनी वकालत आरम्भ कर दी। थोड़े ही दिनों में पटेल बहुत विख्यात हो गए और अहमदाबाद के बड़े बैरिस्टरों में गिने जाने लगे। बड़े-बड़े मुकदमों में आपने पैरवी की और अपने अभियुक्तों को बरी करा दिया। लक्ष्मी की वर्षा होने लगी।

अब पटेल पर पश्चिमी सभ्यता का रंग जमने लगा। अपने आफिस को पटेल ने नया रूप दिया और पश्चिमी फर्नीचर से उसे सजाया। पटेल अब ठाठ से रहने लगे।

सरदार पटेल ने अपनी फीस अहमदाबाद के बैरिस्टरों से अधिक रखी। सरदार अदालत के काम के बाद क्लब भी जाने लगे। क्लब का नाम था गुजरात क्लब। यहाँ पर ये चमन लाल बैरिस्टर के साथ ब्रिज खेला करते। ब्रिज खेलने में भी यह बड़े होशियार हो गए। श्री वाड़िया तथा ब्रोमर नाम के वकीलों के साथ श्री चमनलाल तथा पटेल का ब्रिज में मुकाबला भी हुआ। श्री पटेल तथा चमन लाल ने अपने विरोधियों को बुरी तरह पराजित कर दिया।

अब इस नवयुवक का व्यक्तित्व निखर आया। इसकी ओर नए नवयुवक आकर्षित होने लगे। कुछ लोग इनकी

आलोचना भी करने लगे।

बम्बई में जब विट्ठल भाई के पास धन हो गया तो उन्होंने अपना ध्यान लोक सेवा की ओर भी दिया। दोनों भाइयों ने मिलकर के यह निर्णय किया कि बड़े भाई देश-सेवा करें और पटेल परिवार के सदस्यों का पालन-पोषण करेगा।

विट्ठल भाई राजनैतिक क्षेत्र में भी काफी प्रसिद्ध हुए। सन् १९१९ में लेजिस्लेटिव एसेम्बली के लोअर हाउस के प्रधान चुने गए। विट्ठल भाई ने अपनी योग्यता से इस पद का मान बढ़ा दिया। विदेशी भी इनके कार्य करने की [illegible] की प्रशंसा करने से नहीं चूकते थे।

गांधी जी से भेंट

कुछ दिन पूर्व ही महात्मा गांधी अहमदाबाद आ करके रहने लगे। वे अभी अफ्रीका के आन्दोलन में सफलता प्राप्त करके लौटे थे। पटेल की भेंट गांधी से एक क्लब में हुई।

गांधी जी अहिंसावादी थे। वे अहिंसा द्वारा ही भारत को स्वतन्त्र कराना चाहते थे और जनता में भी अहिंसा का ही प्रचार करते थे। जनता हैरान थी कि अहिंसा के बल पर विदेशी सत्ता से भला कैसे टक्कर ली जा सकती है। सब लोग गांधी जी का मज़ाक उड़ाने लगे और गांधी जी के विचारों पर हंसने लगे।

आरम्भ में सरदार पटेल पर भी गांधी जी के शब्दों का

कोई असर नही हुआ क्योंकि पटेल को राजनैतिक जीवन से कुछ सरोकार नहीं था।

अहमदाबाद में सन्ध्या के समय वकील क्लब मे इकट्ठे होते थे और वहीं पर गांधी जी के बारे में भी चर्चा होती थी। वे सब मिल कर के गांधी की हंसी उड़ाते।

एक दिन गांधी जी ने क्लब के सदस्यों के सामने अपना भाषण दिया। जब गांधी जी भाषण कर रहे थे तो पटेल एक कोने में ताश खेलते हुए हंस रहे थे।

गांधी जी के शब्दों में जादू था जो लोगों को चुम्बक की तरह अपनी ओर खेंच लेता था। पटेल भी इनकी ओर खिचने लगे और गांधी जी के दृढ़ विश्वास की प्रशंसा करने लगे। गांधी ने गुजरात के राजनैतिक जीवन में नए प्रकाश डाल दिए।

पटेल ने अपना राजनैतिक जीवन गोधरा से आरम्भ किया। सबसे पहले पटेल और गांधी का यहीं साथ हुआ।

इस समय गुजरात में बेगार प्रथा जोरों पर थी।

इस प्रथा को हटाने के लिए एक सम्मेलन हुआ जो गोधरा कानफ्रेंस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सभापति गांधी जी थे। बेगार प्रथा को हटाने के लिए तथा सम्मेलन के प्रस्तावों

को कार्यान्वित करने के लिए एक कमेटी का भी गठन हुआ जिसका मन्त्री पद पटेल को सौंपा गया। मन्त्री पद पर रहते हुए पटेल ने अपनी जिम्मेवारी को समझा और उसको पूरी योग्यता से पूरा भी किया।

पटेल ने सबसे पहले बेगार प्रथा को मिटाने का प्रण किया। सरदार ने कमिशनर को एक पत्र लिखा जो सरकार के नाम एक नोटिस था। पत्र में सात दिन के भीतर ही बेगार प्रथा को बन्द करने के लिए कहा था और साथ में यह भी लिखा कि यदि ७ दिन के अन्दर बेगार प्रथा को समाप्त नहीं किया गया तो बेगार प्रथा को हाईकोर्ट के फैसले के आधार पर गैर कानूनी घोषित कर दिया जाएगा।

सरदार को इस पत्र का शीघ्र ही उत्तर मिला। कमिशनर ने सरदार को बात-चीत के लिए बुलाया और सरदार के कहने के अनुसार बेगार प्रथा की समाप्ति की घोषणा कर दी।

गांधी जी ने जब यह समाचार सुना तो वे बहुत ख़ुश हुए।

गांधी जी इस समय चम्पारन में थे। यहाँ नील का व्यवसाय अंग्रेजों के हाथ में था। अंग्रेज किसानों को बहुत

परेशान करते थे। गांधी जी ने उनका दुःख दूर करने में पूरी सहायता की।

अब गांधी जी ने अपने विचारों को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए एक योजना बनाई। सरदार पटेल को यह योजना बहुत पसन्द आई। गांधी जी को सरदार पटेल का साथ बड़ा अच्छा लगा। अच्छा लगता क्यों न, उन्हें एक योग्य और विश्वस्त साथी जो मिल गया था। गांधी जी के साथ रहने पर पटेल की दशा बदल गई।

सरदार पटेल १६१६ ई० में गांधी जी के साथ मिल गए। सरदार ने अपनी वकालत छोड़ दी। गांधी जी के साथ वे एक मित्र के रूप में रहने लगे। महात्मा गांधी ने जितने भी आन्दोलन किए पटेल ने सब में गांधीजी का साथ दिया। इस तरह वे महात्मा गांधी के दाहिने हाथ बन गए।

खेड़ा सत्याग्रह

सन् १९१७ में वर्षा ऋतु में फसलें खराब हो गईं। खेड़ा जिले में अकाल जैसी स्थिति हो गई। किसानों में इतनी शक्ति नहीं थी कि वे लगान दे सकें। फसल खराब हो जाने पर वहाँ के किसानों ने सरकार से लगान माफ करने के लिए प्रार्थना की। बेचारे किसानों की पुकार की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। वह चाहती थी कि किसानों से लगान जबरदस्ती प्राप्त कर लिया जाएगा।

किसान दुविधा में थे कि ऐसे समय में लगान कहाँ से देंगे। पशुओं का चारा भी नहीं प्राप्त हो रहा था। गरीब लोगों के भूखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

इस पर गांधी जी ने खेड़ा में लगान न देने का अन्दोलन आरम्भ किया। उधर चम्पारन में भी गांधी जी ने अंग्रेज जमी-

दारों के विरुद्ध मोर्चा खोल रखा था। अतः गांधी जी के लिए यहाँ रहना उचित नहीं था। उन्होंने इस सत्याग्रह का भार पटेल को सौंप दिया। पटेल ने इस को स्वीकार भी कर लिया। गांधी जी को पटेल पर जिम्मेवारी सौंपते हुए अति प्रसन्नता हुई। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पटेल अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तरह निभाएगा और सफलता भी उसकी होगी।

पटेल ने अब विदेशी लिबास उतार कर के स्वदेशी लिबास पहन लिया और गांव-गांव में घूमना आरम्भ कर दिया। इन्होंने किसानों में नव जागरण पैदा किया। किसानों को लगान न देने के लिए उभारा। थोड़े ही दिनों जिले के सारे किसान सरकार को लगान न देने के लिए तैयार हो गए।

आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। सरकार की आंखें भी अब इस ओर गई। आन्दोलन को जोर पकड़ता देख सरकार ने किसानों की मांग स्वीकार कर ली और उनका लगान माफ कर दिया।

काला कानून

१६१८ में जर्मनी और इंग्लैंड में युद्ध छिड़ गया। इस वड़ी लड़ाई में गांधी तथा अन्य नेताओं ने सरकार की बहुत सहायता की। गांधी ने गांव-गांव घूम करके जनता को सेना में भरती कराने में पूरा सहयोग दिया और सरकार को चन्दा भी इकट्ठा करके दिया। सभी ने तन-मन और धन से विदेशी सत्ता की सहायता की। अंग्रेजों की जीत हुई। नेताओं को आशा थी कि विदेशी सरकार देश का खुश होकर के कुछ भला करेगी, परन्तु अपना उल्लू सीधा करने वाली कहावत पूरी तरह परितार्थ हुई। अंग्रेजों ने भी आखें बदल लीं।

भारत की सहायता के बदले विदेशी सरकार ने रौलट एक्ट पास कर दिया। इस एक्ट का दूसरा नाम काला कानून है। इस कानून के पास हो जाने से पुलिस के अधिकारों में

बढ़ोतरी हो गई। पुलिस को यह अधिकार मिल गया कि वह किसी भी व्यक्ति पर शक हो जाने पर उसको पकड़ सकती थी। इन लोगों के मुकदमें का फैसला बिना किसी वकील के तथा बिना किसी सफाई लिए हुए किया जा सकता था।

सारे भारत में काले कानून का विरोध हुआ। पं० मदन-मोहन मालवीय ने दिल्ली की बड़ी सभाओं में इस कानून का विरोध कर रहे थे, पर सरकार ने काला कानून पास कर ही दिया।

काले कानून को बनाने वाली सरकार को हटाने के लिए महात्मा गांधी ने २३ मार्च, १६१६ ई० को जनता को २४ घन्टे का उपवास करने के लिए कहा। उन्होंने ६ अप्रैल को भूखे रहकर प्रार्थना करने का भी लोगों में आवाहन किया।

गल्ती से ३० मार्च को दिल्ली में हड़ताल हो गई। हड़तालियों तथा दुकानदारों में कुछ झगड़ा भी हो गया। सेना ने गोली चला दी, फलस्वरूप कुछ आदमी मर गए। ६ अप्रैल को सम्पूर्ण भारत में काले कानून के विरुद्ध हड़ताल हो गई।

दिल्ली की जनता में क्रोध की भावनाएँ उत्पन्न हो गई थीं। वे प्रतिशोध लेने पर उतर आए थे। गांधी जी उनको

शांत करने के लिए दिल्ली जा रहे थे। सरकार ने गांधी को दिल्ली पहुँचने से पहले ही हिरास्त में ले लिया और वे दिल्ली न पहुँच सके। सरकार के इस व्यवहार से पंजाव-वासी भी उत्तेजित हो गए। पंजाव के दो वड़े नेताओं को भी पकड़ लिया गया और उनको पंजाव के वाहर भेज दिया गया। यह सव देख कर के अमृतसर का एक शांति दल डिप्टी कमिशनर से मिलने उनके वंगले की ओर गया। यह शांति दल अपने दोनों नेताओं को प्रार्थना करके छुड़ाना चाहता था। रास्ते में इस दल को रोका गया और इस निहत्थे शांति दल पर गोली भी चलाई गई। इससे जनता ने और उग्र रूप धारण कर लिया। उसने रास्ते में जो भी अंग्रेज उसे मिला उसे खूव मारा।

अमृतसर में सैनिक शासन हो गया। नगर का प्रवन्ध श्री डायर के हाथों में दे दिया गया। जेनरल डायर ने शहर में सभा करने पर रोक लगा दी। १३ अप्रैल को जलियांवाला वाग में सभा हुई। सभा में वड़ी भीड़ थी। सभा जिस समय पूर्ण विकसित थी तो श्री डायर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। १४ मिनट तक गोली चली। वाग के चारों ओर पुलिस पहरा था। कोई भी भाग नहीं सकता था। वाग में वहुत भीड़ थी।

बहुत से बूढ़े, बच्चे, स्त्रियाँ तथा नवयुवक मरे और घायल हो गए।

लाहौर, अमृतसर, कसूर आदि स्थानों पर सेना ने शासन सम्भाल लिया। जनता तथा स्त्रियों की असमत लूट ली गई। लोगों को नंगे करके पीटा गया। वायुयानों से घरों पर गोले चलाए गए। ऐसे निर्दयी अधिकारी को सरकार ने क्षमा कर दिया और वापिस विलायत भेज दिया गया। कई वर्ष बाद ऊधम सिंह ने विलायत जाकर के डायर को गोली से भून दिया।

असहयोग आन्दोलन

इन दोनों घटनाओं से जनता में रोष की भावना उत्पन्न हो गई। अब स्वतन्त्रता की लहर देश के कोने-कोने में उठने लगी। गांधी जी को भी इन घटनाओं से गहरा आघात पहुँचा। उन्होंने १९२० में कलकत्ता के अधिवेशन में अहिंसात्मक असहयोग का निश्चय किया। कौंसिलों, स्कूलों और अदालतों के वहिष्कार के बारे में प्रस्ताव पास हुए। इसके जवाब में असंख्य विद्यार्थियों ने स्कूल तथा कालिजों में जाना बन्द कर दिया। वकीलों ने वकालत छोड़ दी। सरकारी कर्मचारियों ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिए।

असहयोग का आन्दोलन आरम्भ होते ही महात्मा गांधी ने 'केसरे हिन्द' का तमगा वायराय को वापिस कर दिया। पटेल, पं० मोतीलाल, पं० जवाहरलाल आदि ने देश में घूम-

घूमकर के सरकार से असहयोग करने का प्रचार आरम्भ किया।

सरदार पटेल ने भी अब बैरिस्टरी छोड़ दी थी और अपनी सारी शक्ति देश-सेवा में लगाने का इन्होंने प्रण कर लिया। उन्होंने गुजरात का दौरा किया। वहां पर भाषण किए। जनता को उत्साहित किया। गुजरात के घर-घर में इनकी पूजा होने लगी।

पंजाब की घटना से इनके मन में अंग्रेजों के प्रति इतनी घृणा उत्पन्न हो गई कि इन्होंने अपने पुत्रों को अंग्रेजी स्कूलों से हटा लिया। पहले यह अपने पुत्रों को पढ़ने के लिए विलायत भेजना चाहते थे, किन्तु अब इनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया। गुजरात में एक विद्यापीठ की स्थापना की जिसके लिए इन्होंने वर्मा तक जाकर चन्दा जमा किया और दस लाख रुपए जमा कर लिए।

सन् १६२२ ई० की पांच फरवरी को गोरखपुर के समीप के स्टेशन चौरी चौरा में पुलिस और जनता में संघर्ष हो गया। जनता ने उग्र रूप धारण कर लिया और वहां सब सिपाहियों तथा थानेदार को थाने में बन्द करके जला दिया गया। असहयोग आन्दोलन के लिए शांति की आवश्यकता थी परन्तु यहां

कि जनता शांति बनाए रखने में असफल रही । महात्मा गांधी ने आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया । सरकार ने गांधी पर मुकदमा चलाकर के उनको ६ वर्ष कैद की सजा सुना दी ।

महात्मा जी के पकड़े जाने पर गुजरात-आन्दोलन का कार्यभार सरदार पटेल ने ही सम्भाला ।

बोरसद की जनता को भी सरकार ने दबाया । वहाँ की जनता पर सरकार ने कई जुर्म लगा करके वहाँ पुलिस-व्यवस्था करने के लिए जनता पर चालीस हज़ार रुपए के कर और लगा दिए । जो जुर्म वहाँ की जनता पर लगाए गए थे, उन-में तनिक भी सत्यता नहीं थी । यह बात सरदार से भी छुपी हुई नहीं थी । सरदार ने यहाँ पर भी इसका विरोध किया और सरकार के विरुद्ध एक बड़ा भारी जनमत खड़ा कर दिया । सरकार तथा वहाँ के पुलिस अफसरों को इस शेर के सामने घुटने टेकने पड़े ।

१९२३ में नागपुर में कांग्रेस ने अपने तिरंगे झण्डे के साथ जलूस निकालने की घोषणा की । सरकार ने इस जलूस पर प्रतिबन्ध लगा दिया । सरदार पटेल ने यहाँ पर अपनी योग्यता का अपूर्व परिचय दिया । उन्होंने गुजरात से कई जत्थे स्वयं-

सेवकों के भेजे। कांग्रेस ने जलूस पर लगाए गए प्रतिबन्ध को अपना अपमान समझा। इसी समय सेठ जमनालाल को सरकार ने हिरासत में ले लिया और अब इस सत्याग्रह का कार्य-भार पटेल के कंधों पर ही आ गया। उन्होंने आन्दोलन को नया ही रूप दिया जिससे सारे भारत वर्ष में आन्दोलन हो गया। संगठन की प्रबलता को देख करके सरकार इनके आगे झुक गई। गवर्नर ने सरदार पटेल से बातचीत करने के पश्चात् जलूस निकालने की आज्ञा दे दी और जनता की मांगें भी स्वीकार कर ली गईं।

महात्मा गांधी जेल से छूट गए। सरदार को अब कुछ आराम मिला। गांधीजी के जेल जाने पर पटेल की ज़िम्मेवारी बहुत बढ़ गई थी। गांधी ने पटेल को अपनी ज़िम्मेवारी पूरी तरह निभाने पर हार्दिक बधाई दी।

इसी समय आप अहमदाबाद म्यूनिसिपेलिटी के चेयरमैन भी बन गए। आपने इस पद पर रहते हुए लगातार पांच वर्ष तक जनता की निरन्तर सेवा की और वही कार्य किए जिनसे जनता की अधिक भलाई होती थी।

गुजरात में बड़े ज़ोर की बाढ़ आई जिससे अनेक गांव बरबाद हो गए। ऐसे समय में पटेल ने बाढ़-पीड़ितों की बहुत सहायता की थी।

बारडोली का सत्याग्रह

बम्बई प्रान्त में बारडोली एक छोटा-सा तालुका है। यहाँ पर हर २० या ३० वर्ष बाद भूमि का नया इन्तजाम होता था और सरकार की ओर से लगान भी तय कर दिया जाता था। जो लगान सरकार द्वारा तय कर दिया जाता था, किसानों को अगले वर्षों में वह देना ही पड़ता था।

सदैव की भांति अधिकारियों ने भूमि की जाँच-पड़ताल की और लगान में २५ प्रतिशत वृद्धि कर देने का सुझाव भी सरकार को दिया गया। किसानों की दशा में तनिक भी सुधार नहीं हुआ था। किसान जो लगान अब भी सरकार को दे रहे थे वह भी अनुचित था। सरकारी अधिकारियों की गल्त रिपोर्ट के कारण जुलाई सन् १९२७ ई० को सरकार ने लगान की दर में २५ प्रतिशत की वृद्धि कर दी।

सरकार ने लगान इसलिए बढ़ा दिया कि भूमि की उपज बढ़ गई थी और खेतों का मूल्य भी बढ़ गया था।

बारडोली तालुका समिति ने सरकारी अधिकारियों की रिपोर्ट का खण्डन किया और आंकड़े देकर के सरकार को बताया कि लगान में वृद्धि उचित नहीं है और सरकार की लगान की मौजूदा दर को भी अनुचित बताया। जनता के प्रतिनिधि सरकार से भी मिले परन्तु सरकार ने इनकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी।

सरकार का लगान वृद्धि का प्रस्ताव पास हो गया। इस के बाद राय साहब दादू भाई देसाई की अध्यक्षता में किसानों की एक सभा हुई और इस सभा में लगान की बढ़ी हुई दर न चुकाने का फैसला किया गया। सरकार पर इसका असर नहीं पड़ा और अधिकारी-गण को बढ़ी हुई दरों पर कर वसूल करने के लिए सरकारी आदेश आ गए।

अब सब लोग पटेल के पास आए। सरदार ने उनकी बात ध्यान से सुनी। पटेल ने किसानों को [illegible] आशा भी दिलाई। सरदार ने उनसे कहा, "[illegible] होकर के लगान न देने का फैसला कर लो। [illegible] सहन करने के लिए तैयार होओ। [illegible]

कर सकें तो मैं आप की सहायता करने को तैयार हूँ। तुम लोग सारे तालुके में घूमो और मुझे आ करके बताओ कि और किसानों की क्या राय है ? क्या वे आपका साथ देने को तैयार हैं ?"

सभी ने पटेल की बात मान ली और कार्यकर्त्ता रात-दिन एक करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमने लगे। आठ-दस दिन में ही उन्होंने सारे तालुके की छान-बीन कर ली। अधिकाँश गांवों की राय जान करके सभी लोग अहमदाबाद लौटे। इनके साथ अब पंड्यजी, रविशंकर महाराज आदि भी थे। पटेल के नेतृत्व में यह मण्डली गांधी जी से जाकर मिली। गांधी को पूर्ण स्थिति से अवगत कराया गया। गांधीजी ने पटेल को विजयी होने का आशीर्वाद दिया।

पटेल ४ फरवरी को बारडोली आए। उस दिन तालुके के सभी गांव वहाँ एकत्रित हुए। सरदार ने सबकी अच्छी तरह परीक्षा की और उन्हें कसौटी पर भी कसा। पटेल ने जनता का आह्वान किया। किसानों को आश्वासन दे करके पटेल अहमदाबाद वापिस आ गए। ६ फरवरी को सरदार ने सरकार को पत्र लिखा जिसमें प्रार्थना की गई कि सरकार इस समय लगान की वसूली स्थगित कर दे और सारे मसले पर नए सिरे

से विचार करे जिससे किसानों को भी कुछ राहत मिल सके। -

। - । गवर्नर ने इस पत्र पर विशेष ध्यान नहीं दिया। पत्र को माल विभाग में जाँच के लिए भेज दिया गया। लगान वसूली का आदेश नहीं रुका। अधिकारी लगान वसूली के लिए कार्यवाही करने लगे।

सरकार ने १२ फरवरी तक किसानों को कर चुकाने के लिए मुनादी कर दी। मालगुजारी के लिए जो अधिकारी नियुक्त हुए थे वे तरह-तरह के उपाय काम में लाते थे परन्तु वे किसानों से कर वसूल करने में असफल रहे।

जब १२ फरवरी तक खजाने में कुछ भी जमा नहीं हुआ तो सरकार का क्रोध बढ़ गया। सरकार ने कर वसूल करने वालों को अयोग्य समझ करके उनको निकाल कर के उनके स्थान पर नए अधिकारी नियुक्त किए। ये अफसर ऐसे थे जो किसानों के साथ कड़ाई भी कर सकते थे।

किसान-संगठन अब सुदृढ़ हो गया था। आन्दोलन का सब समाचार, 'सत्याग्रह-समाचार' नामक दैनिक समाचार-पत्र में छपता था। अधिकारियों को किसानों ने स्पष्ट बता दिया कि वे कर नहीं देंगे।

सरकारी अधिकारी जब कर वसूल करने आते तो किसान

उनका स्वागत नहीं करते थे। उनसे कोई बात भी नहीं करता था और न ही उन्हें बैठने के लिए कोई स्थान दिया जाता था। यहाँ तक की किसानों ने उनको पानी तक के लिए भी नहीं पूछा।

सरकारी अधिकारी किसानों का सामान कुड़क कर के निलामी करने लगे तब किसी भी गांव वाले ने बोली नहीं बोली।

अधिकारी भी असमंजस में पड़ गए। अफसर लोग बाहर से ऐसे लोगों को बुला लाए जो नीलामी का सामान खरीदना चाहते थे। नीलामी के सामान की बोली बोलनें वालों में एक पारसी सरदार था। सामान खरीदने के लिए वह बोली तो बोल देता था परन्तु खरीदे हुए सामान को ले जाने के लिए मजदूर भी नहीं मिलते थे।

पटेल जिले भर के नेता माने जाते थे। सत्याग्रह का संचालन भी उन्हीं के हाथों हो रहा था। वह अपने कार्यों में, किसी को भी दखल नहीं देने देते थे चाहे वह कांग्रेसी क्यों न हो।

कुछ बाहरी कांग्रेसजन पटेल से मिलने गए। ये बारडोली के आन्दोलन में सहायता देना चाहते थे। सरदार को उनकी

बात पर गुस्सा आया। वे बाहरी सहायता लेना नहीं चाहते थे। उन्हें बाहरी सहायता की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन कांग्रेसजनों ने पटेल को बताया कि वे पारसी सरदार को निलामी का सामान न खरीदने के लिए मना करने आए हैं। यह बात सुन कर पटेल ने कहा, "बारडोली में एक ही सरदार है जिसकी आज्ञा सभी मानते हैं।"

कांग्रेसजनों ने गांधीजी से जाकर के यह बात कही ? गांधीजी इस बात को सुन करके हंस पड़े और कहने लगे की वल्लभ भाई वास्तव में सरदार ही हैं। तभी से पटेल को सरदार कहा जाने लगा।

अब सरकार का क्रोध और भड़क गया था। सेना का भी प्रयोग हुआ। हजारों आदमी हिरासत में ले लिए गए। पुलिस के अत्याचार बढ़ गए। घर से स्त्रियों का निकलना कठिन हो गया। पानी पर भी प्रतिबन्ध लग गया। किसानों ने तनिक भी आवाज़ नहीं उठाई। वे सब चुपचाप सहनकर रहे थे।

सरकार ने अब पठानों को भी भरती कर लिया। पठान किसानों पर मनमाने अत्याचार करने लगे। सरकार के सभी प्रयत्न विफल हो गए और किसानों को किसी तरह भी नहीं झुका सकी।

समाचार-पत्रों में सरकार की निन्दा होने लगी। जनता जब समाचार-पत्र पढ़ती तो उसके हृदयों को ठेस पहुँचती थी।

यह सब देखकर के बम्बई की कौंसिल के १६ सदस्यों ने गवर्नर को अपना त्याग-पत्र दे दिया। इसी समय पटेल के बड़े भाई दिल्ली में केन्द्रीय असेम्बली के सभापति थे। उन्होंने सरकार से इस मामले में हस्तक्षेप करने को कहा। सरकार को उन्होंने यह धमकी भी दी कि यदि उनकी बात पर विचार न हुआ तो वे अपने पद से त्याग पत्र दे देंगे और सरदार पटेल के साथ सत्याग्रह में सम्मिलित होकर के देश-सेवा में हाथ बटाएंगे।

देश भर के स्वयंसेवक सत्याग्रह को सहायता देने के लिए धन तथा अन्य साधन जुटा रहे थे। प्रत्येक प्रांत से स्वयंसेवक आने को तैयार थे।

अन्त में जब सरकार का कुछ बस न चला तो सरकार को झुकना पड़ा। एक जांच कमेटी नियुक्त की गई। इसके अध्यक्ष हाईकोर्ट के एक जज थे।

बड़ी दौड़-धूप के बाद सरकार तथा किसानों में अगस्त सन् १९२८ को समझौता हो गया। अदालत ने केवल ६२

प्रतिशत वृद्धि का सुझाव दिया। दोनों पार्टियों ने इसको स्वीकार कर लिया। किसानों की निलाम की हुई सम्पत्ति किसानों को वापिस कर दी गई। लोगों को पुनः नौकरियों पर रख लिया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा कर दिया गया। अगस्त को तालुके भर में विजय-दिवस मनाया गया और इस सत्याग्रह ने ऐतिहासिक महत्व प्राप्त किया।

सरदार की सफलताओं में से यह सफलता सब से बड़ी थी। पटेल का नाम अब भारत में ही नहीं विदेशों में भी चमकने लगा।

जेल यात्रा

इधर महात्मा गांधी ने २ मार्च, १९३० ई० को वायसराय को एक पत्र में यह स्पष्ट लिखा कि यदि सरकार ने नमक-कानून वापिस नहीं लिया तो वे इसे तोड़ने के लिए सत्याग्रह करेंगे। सरकार का उत्तर सन्तोषजनक नहीं था। २१ मार्च को गांधीजी ने ८० स्वयंसेवकों के साथ नमक कानून तोड़ने के लिए डांडी (सूरत में समुद्रतट पर स्थित एक स्थान का नाम) की ओर प्रस्थान किया। छः अप्रैल को सम्पूर्ण भारत-वर्ष में सत्याग्रह आरम्भ हो गया। नमक-कानून टूटने लगा। जनता ने जगह-जगह पर नमक बनाकर के बेचना शुरू कर दिया।

जब यह सत्याग्रह आन्दोलन जोरों पर था तो सरदार पटेल को भी ७ मार्च, १९३० को हिरास्त में ले लिया था। इन

पर मजिस्ट्रेट की आज्ञा भंग करके भाषण करने का जुर्म लगाया गया। इसी में सरदार को ५०० रुपया जुर्माने के साथ-साथ तीन मास की कड़ी सजा हुई। सरदार को जेल में तरह-तरह के कष्ट दिए गए। सरदार का स्वास्थ्य भी गिर गया। २६ जून १६३० को पटेल को जेल से मुक्ति मिली।

जेल से मुक्त होने पर सरदार ने सत्याग्रह में कोई भी कमी नहीं पाई। सरकार ने गिरफ्तारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़े-बड़े नेता जेल जा चुके थे। महात्मा गांधी को भी ५ मई को पकड़ लिया गया था और इस समय वे यरवदा जेल में थे। पं० मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे। सरकार ने ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी को अवैध घोषित कर के पं० मोतीलाल को गिरफ्तार कर लिया। सरदार पटेल को अब इस पद पर बिठाया गया। सरदार पटेल ने नमक सत्याग्रह को बल दिया। समय कठिन था। सरकार ने अपने सभी प्रबल उपाय किए। गोली चलाना, लाठी चार्ज करना, मारपीट करना आदि तो बच्चों का खेल ही हो गया था।

प्रथम अगस्त को लोकमान्य तिलक की बरसी थी। बम्बई नगर में धारा १४४ लगी हुई थी। पटेल भी बम्बई में

थे। इसी सम्बन्ध ने पटेल ने एक बड़ा जलूस निकालकर के धारा १४४ को तोड़ने का निश्चय किया। पं० मदनमोहन मालवीय ने भी आप का साथ दिया। सरदार ने एक विशाल जलूल निकाला। सरकार ने जलूस को अवैध घोषित कर दिया और इसको आगे बढ़ने से रोक दिया। जलूस वहीं रुक गया। २४ घन्टे तक जलूस शांति के साथ वहीं खड़ा रहा। पुलिस ने पटेल, तथा डा० डार्डीकर, मालवीय आदि नेताओं को पड़क लिया और जलूस को लाठी चार्ज करके तितर-बितर कर दिया। सरदार को तीन मास की जेल हुई।

अब गांधी और इर्विन में समझौता हो गया।। समझौते के अनुसार सत्याग्रह बन्द हो गया और सभी राजनैतिक नेता भी जेलों से रिहा कर दिए गए।

सन् १९३१ के मार्च के अन्त में कांग्रेस का अधिवेशन कराची में हुआ। सरदार पटेल को इस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। कांग्रेस ने पहली बार यहाँ पर भारत की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक रूपरेखा पर विचार किया। इसी अधिवेशन में राष्ट्रीय झंडे के रंग के बारे में विचार-विनमय हुआ। प्रसिद्ध क्रांन्तिकारी सरदार भक्त सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को अभी-अभी फांसी हुई थी अतः यह समारोह

भी सादगी से मनाया गया। युवक गांधीजी को ही इस फांसी के लिए जिम्मेवार मानते थे, अतः उन्होंने अपना रोष प्रकट करने के लिए गांधी जी का अधिवेशन में काले झण्डों से स्वागत किया।

अधिवेशन के अन्त में सरदार पटेल ने भाषण दिया। भाषण के प्रारम्भ में सरदार भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। जनता को सत्य और अहिंसा के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। भाषण से जनता में एक जागृति आ गई।

कांग्रेस का यह अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में अपना एक प्रमुख स्थान रखता है।

महात्मा गांधीजी अब गांधी-इर्विन समझौते के अनुसार गोलमेज़ कान्फ्रेंस में भाग लेने इंगलैंड गए।

महात्मा गांधी की अनुपस्थिति में कांग्रेस की पूर्ण जिम्मेवारी पटेल पर आ गई। सरदार ने अपनी जिम्मेवारी को बड़ी कुशलता से निभाया।

सरकार ने गांधी के पीछे से भी अपनी दमन की नीति को नहीं छोड़ा। पटेल ने गांधीजी के वापिस आने तक कोई भी कदम न उठाने का निश्चय किया।

लन्दन में गोल मेज़ कान्फ्रेंस में कोई समझौता नहीं हो सका। वार्ता असफल हो गई और गांधीजी स्वदेश खाली हाथ वापिस लौट आए।

महात्मा गांधी ने आते ही सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। सारे भारतवर्ष में आन्दोलन पुनः जागृत हो उठा। कांग्रेस कार्य सम्मिति की बैठक बम्बई में हुई। पं० नेहरू इसमें भाग लेने बम्बई जा रहे थे। इनको मार्ग में ही पकड़ लिया गया। महात्मा गांधी ने इस सम्बन्ध में वायसराय को लिखा परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। देश भर में गिरफ्तारियाँ आरम्भ हो गईं। सभी बड़े-बड़े नेता पकड़ लिए गए। सरदार पटेल को भी पकड़ लिया गया।

कई दिनों तक यह आन्दोलन चलता रहा। गांधीजी जेल से छूटे तो उन्होंने कांग्रेसी नेताओं के परामर्श से आन्दोलन स्थगित कर दिया।

सत्याग्रह बन्द होने पर सरकार ने पटेल के अतिरिक्त सभी बन्दियों को रिहा कर दिया। सरदार पटेल को छोड़ना नहीं चाहती थी। सरकार को ज्ञात था कि सरदार जेल से छूटने पर फिर से उसके लिए सिर दर्द बन जाएगा।

बन्दीगृह में सरदार का स्वास्थ्य दिन-प्रति दिन खराब

होने लगा। देश भर की जनता चिन्तामग्न हो गई। अन्त में सरकार ने सरदार पटेल के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर के सन् १६३४ के अन्त में सरदार को मुक्त कर दिया।

इधर सन् १६३५ में सरकार ने प्रान्तों में नए चुनाव की घोषणा की। कांग्रेस ने भी चुनाव लड़ने का फैसला किया। पटेल को कौंसिल चुनाव लड़ने तथा पार्लियामेंटरी बोर्ड की जिम्मेवारी सौंपी गई।

चुनाव के समय पटेल ने लोगों को समझाया और कांग्रेस की जीत होने पर उसके लाभ भी बताए।

सरदार पटेल ने कहा था, "शूर युद्ध मे पीठ नही दिखाते, जो युद्ध में पीठ दिखाते हैं वे शूर नही होते।"

पटेल ने जनता को इतना प्रोत्साहित किया कि १६३७ के चुनाव में कांग्रेस को आठ प्रान्तों में कांग्रेस का अपना मन्त्री-मंडल बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ।

प्रारम्भ में सरकार ने यह निश्चय कर लिया कि यदि मन्त्री-मंडल के काम में गवर्नर हस्ताक्षेप करेंगे तो कांग्रेस मन्त्री-मंडल नहीं बनाएगी। इस बात को ले करके कांग्रेस और सरकार में गतिरोध उत्पन्न हो गया। अन्त में वायसराय ने इनकी

बात मान ली। कांग्रेस ने अपना मन्त्री-मंडल बना करके आठ प्रांतों का राजप्रबंध अपने हाथों में ले लिया। सरदार ने इस मंत्रीमंडल का नेतृत्व किया। पहले उन्होंने एक अनुशासनात्मक ढंग अपनाया। पटेल के नेतृत्व में मंत्री-मंडल एक प्रभावशाली संस्था बन गया जिससे कांग्रेस का नाम और प्रसिद्ध हो गया। जनता को अब विश्वास हो गया कि अपनी सरकार तथा विदेशी सरकार में क्या अन्तर है। कांग्रेस के मंत्री-मंडल ने दो वर्ष तक कार्य किया।

यह प्रथम अवसर था जब विदेशी सत्ता ने स्वतन्त्र रूप से कांग्रेस को प्रांतों का प्रबन्ध करने का अवसर दिया। एक बार उत्तर-प्रदेश के एक गवर्नर ने इनके कामों में हस्तक्षेप किया। फिर क्या था, सरदार पटेल ने अपने मंत्री-मंडल का त्यागपत्र दे दिया। अब सरकार और कांग्रेस में दोबारा गतिरोध उत्पन्न हो गया। सरकार झुक गई।

सरकार के आदेश पर सरदार ने अपने कार्य को दोबारा आरम्भ कर दिया।

राजसत्ता सम्भालने के पश्चात् इनका मान और बढ़ गया। सरदार को अनुशासन पसंद था। कोई भी व्यक्ति कांग्रेस

के आदर्शों तथा नीतियों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता था। एक बार सी० पी० के प्रधानमंत्री डा० खरे ने कांग्रेस की नीतियों का पालन नहीं किया तो उसे तुरन्त ही प्रधानमंत्री पद से हटा दिया गया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन

सन् १९३९ में द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। ब्रिटेन ने इस युद्ध में भारत को भी सम्मिलित कर लिया। गांधीजी ने इस युद्ध का विरोध किया। वे ब्रिटेन की सहायता नहीं करना चाहते थे। वे चाहते थे कि पहले अंग्रेज़ भारत को स्वतन्त्र करें तभी भारतीय जनता उनका साथ देगी। सरकार ने उनकी बात ठुकरा दी और कांग्रेस मन्त्रीमंडल को त्याग पत्र देने का आदेश दे दिया गया और राज्यों का प्रबन्ध गवर्नरों के हाथों में सौंप दिया गया।

महात्मा गाँधी ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए १९४० में सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। इस सत्याग्रह में जनता को

अंग्रेजों की सहायता न करने का परामर्श दिया गया। सरदार पटेल को भी इस सत्याग्रह में जेल हो गई।

यह आन्दोलन असफल रहा। सन् १९४२ में कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अन्तिम आन्दोलन आरम्भ किया। आठ अगस्त १९४२ को बम्बई में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास हुआ।

इस प्रस्ताव में अंग्रेजों से भारतीय जनता को स्वशासन देने की माँग को दुहराया गया था और अंग्रेजों को तुरन्त भारत छोड़कर जाने के लिए भी कहा गया था।

सरकार इस घोषणा से क्रुद्ध हो गई और नेताओं की गिरफ्तारियाँ आरम्भ हो गईं। महात्मा गांधी तथा सरदार पटेल भी पकड़ लिए गए। महात्मा गांधी को तो पूना में आगा-खां महल में रखा गया। सरदार पटेल को अहमद नगर फोर्ट में बंद किया गया। नेताओं के गिरफ्तार होते ही जनता में भी क्रांति की लहर आ गई। जनता ने हिंसात्मक मार्ग अपनाया। गांधी जी की अहिंसा को लोगों ने भुला दिया। जनता ने रेलों की पटरियाँ उखाड़ दीं। थानों को जला दिया गया। टेलीफोन

की तारें तक काट दी गई। सितारा और बलिया जैसे स्थानों में जनता ने अपना राज्य भी स्थापित कर लिया।

सरकार ने इस क्रांति को दबाने के लिए कठोर पग उठाया। बच्चों, बूढ़ों और जवानों को गोलियों का निशाना बनाया गया। उनको तरह-तरह की यातनाएँ भी दी गईं।

सन् १९४५ में यह लड़ाई समाप्त हो गई। श्री भोलाभाई देसाई के यत्नों से जून में प्रमुख कांग्रेसी नेता रिहा हो गए। सरदार पटेल को भी १५ जून को रिहा कर दिया गया। राजनैतिक उलझन को हल करने के लिए भारत के वायसराय ने भारतीय राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया। यहाँ मुस्लिम लीग (यह संस्था मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करती थी) और कांग्रेस में समझौता न हो सका। समझौते का हर सम्भव प्रयत्न किया गया परन्तु वह असफल हो गया। शिमला सम्मेलन टूट गया। इस सम्मेलन में सरदार ने प्रमुख भूमिका अदा की। सरदार पटेल ने विदेशी सत्ता को चेतावनी दी और कहा, "यदि सरकार ने हमें स्वतन्त्र न किया तो हम जबरदस्ती सत्ता छीन लेंगे।"

कांग्रेस के नेताओं के जेल जाने के बाद जनता में यह धारणा घर कर रही थी कि अब कांग्रेस की आन में कुछ परि-

वर्तन हो जाएगा। परन्तु सरदार की घोषणा से उन की यह धारणा बदल गई। सरदार ने कहा कि 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का प्रस्ताव किसी मूल्य पर भी नहीं बदला जाएगा। यदि आवश्यकता होगी तो 'एशिया छोड़ो' का भी प्रस्ताव पास कर दिया जाएगा।

स्वतन्त्र भारत

अब इंगलैंड में आम चुनाव हुआ। चर्चिल का स्थान एटली ने ग्रहण किया। उनके आदेशानुसार १९४५-४६ में भारतवर्ष में भी चुनाव हुआ। सिंध और बंगाल में मुस्लिम लीग को बहुमत प्राप्त हुआ। दूसरे प्रांतों में कांग्रेस को बहुमत मिला। १९४६ में इंगलैंड की लेबर सरकार ने अपने मन्त्री-मंडल के तीन सदस्यों के एक दल को भारत की समस्या का हल ढूँढने के लिए भेजा। इस दल ने विभिन्न राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिल करके एक योजना तैयार की।

कांग्रेस ने इस योजना को स्वीकार कर लिया जिसके अनुसार एक अन्तरिम सरकार बनी। कांग्रेस भी इसमें शामिल

हो गई। आरम्भ में मुस्लिम लीग ने यह योजना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् वह भी अन्तरिम सरकार में सम्मिलित हो गई। २१ सितम्बर, १६४६ को पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपना मंत्रीमंडल बनाया। सरदार पटेल गृहमंत्री बने। सूचना तथा प्रसारण विभाग भी आपके पास ही था। यह कार्यभार उन्होंने बड़ी कुशलता से राष्ट्र की भलाई के लिए स्वीकार किया।

सरकार की यह योजना भी असफल हो गई।

१६४७ में भारत के वायसराय (वावेल) वापिस चले गए। इनके स्थान पर अंग्रेज सरकार ने लार्ड माउण्ट बेटन को वायसराय बना करके भेजा। २८ जुलाई, १६४७ को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने भारतीय स्वतन्त्रता का बिल पास कर दिया।

अब फिर मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता न हो सका। लार्ड माउण्टबेटन ने भारतवर्ष को दो भागों में विभक्त कर दिया। भारत और पाकिस्तान के दो नए राज्य बने। इन दोनों राज्यों को १५ अगस्त १६४७ को स्वतन्त्रता मिल गई। दोनों को विदेशी दास्ता से मुक्ति मिल गई। अपने

देश में अपना राज्य स्थापित हो गया। सरदार पटेल केन्द्रीय राष्ट्रीय सरकार के उपप्रधान मंत्री बने

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् संप्रादायिक दंगे आरम्भ हो गए। पश्चिमी पंजाब, सीमा प्रान्त और बंगाल से हिन्दू सिक्ख भारत आ गए और बहुत से मुस्लमान पाकिस्तान चले गए। इस अदला-बदली से असंख्य परिवार नष्ट हो गए।

गांधीजी ने इन दंगों को बन्द कराने के लिए आमरण अनशन आरम्भ कर दिया। नेताओं के विश्वास दिलाने पर इन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया। परन्तु एक पागल नवयुवक ने ३० जनवरी की शाम को गांधीजी को गोली से मार डाला। सारे देश में शोक मनाया गया। इस घटना से सरदार पटेल को गहरा आघात पहुँचा।

सरदार ने लीग की कुचालों को विफल कर दिया और समस्त विरोधी शक्तियों को पराजित कर दिया।

रियास्तों का संगठन

अपने पद पर रहते हुए जो महत्त्वपूर्ण कार्य पटेल ने किए उनमें से एक रियास्तों का एकीकरण भी है। अंग्रेज भारत छोड़ते समय लगभग ६०० रियास्तों को स्वतन्त्र छोड़ गए थे। इन रियास्तों का क्षेत्रफल काफी अधिक था। ये रियास्तें राजाओं के अधीन थीं। विदेशी सत्ता के समय ये सब इंगलैंड के राजा को कर देते थे और अपने राज्य में अपना ही प्रबंध करते थे। अंग्रेजों ने इन राजाओं की अपनी सरकार से हुए सभी समझौतों को रद्द कर दिया। अंग्रेजों ने वह अधिकार भी समाप्त कर दिया जिसके अधीन इन राजाओं का नियन्त्रण हुआ करता था। भारत के सामने इनकी समस्या ने विकिट रूप ग्रहण कर लिया।

सरदार पटेल ने इस समस्या का हल खोजा। सरदार यह समझते थे कि जब तक इन सबको भारत में नहीं मिलाया जाएगा तब तक ये भारत के लिए सिर दर्द ही बने रहेंगे।

ऐसे समय में सरदार ने सब बड़े-बड़े नरेशों से बातचीत की और उनको भारत में सम्मिलित हो जाने के लिए मना लिया गया। उनकी दूरदर्शिता से छोटी-बड़ी रियासतों को भारत में मिला लिया गया। इन रियासतों के राजाओं ने अपनी इच्छा से शासन का भार जनता को सौंप दिया।

इसी समय हैदराबाद के नरेश ने भारत में मिलने से इन्कार कर दिया। उसने अपनी स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह कर दिया। पटेल ने तुरन्त निर्णय करके भारतीय फौज की सहायता से इस पर हमला कर दिया। कुछ दिनों तक तो इसका काफी प्रतिरोध हुआ परन्तु शीघ्र इस रियासत को जीत करके इसको स्वाधीन कर लिया गया।

कश्मीर की समस्या को भी इन्होंने इसी ढंग से हल करने का प्रयत्न किया था परन्तु कुछ बड़े नेताओं के बीच आने के कारण हल नहीं हो सकी और आज भी यह समस्या जहाँ थी, वहीं पर है।

सरदार ने भारत को एकता की डोरी में बांध दिया। इन्होंने भारत को ऐसा इकट्ठा किया जिसको अभी तक कोई भी नहीं कर सका था। इसपर अंग्रेजों की 'बांटो और राज्य करो' की नीति को विफल कर दिया।

हवाई दुर्घटना

२५ मार्च, १९४९ को सरदार पटेल दिल्ली से जयपुर के लिए राजस्थान यूनियन का उद्घाटन करने के लिए गए। मार्ग में हवाई जहाज में कुछ खराबी आ गई। पायलट ने वायुयान को बड़ी होशियारी से मार्ग में ही उतार लिया। जिस से पटेल को मार्ग में विलम्ब हो गया।

ठीक समय जब ये जयपुर नहीं पहुँचे तो सभी नेताओं में चिन्ता की लहर दौड़ गई। वायुयान तथा मोटर गाड़ियों द्वारा इनकी तलाश आरम्भ हो गई। सरदार पटेल चार-पांच घन्टे बाद जयपुर सकुशल पहुँच गए। जनता तथा नेताओं में हर्ष छा गया।

स्वर्गवास

सरदार पटेल को १५ दिसम्बर, १९५० को हृदयरोग का दौरा पड़ा और ९ बज करके ३७ मिनट पर बिड़ला भवन में आपका देहान्त हो गया।

मृत्यु के समय भी आपके मुख पर एक अलौकिक कांति विद्यामान थी।

मृत्यु से दो घंटे पूर्व पुरोहितों ने मन्त्रों का उच्चारण प्रारंभ कर दिया था। इनके मुख में गंगाजल तथा तुलसीदल भी डाला गया। आपके पुत्र श्री डाह्याभाई पटेल ने श्री पटेल के शरीर को गंगाजल से नहलाया और उसके उपरान्त उनके शरीर को बिड़ला भवन के सामने एक पुष्पशैया पर जनता के दर्शनार्थ रख दिया गया।

अपार जन समूह ने आपका दर्शन किया और प्रत्येक ने अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित की।

श्री पटेल के शव का जलूस उसी दिन रात को श्मशान घाट पर पहुँचा।

सार्वजानिक नेताओं ने इनके शव को सम्मानपूर्वक फौजी गाड़ी से उतार करके अपने कन्धों पर रखा और उसे सफेद चबूतरे पर सफेद चादर से ढक करके लिटा दिया।

अब डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, श्री नेहरू, श्री राजगोपालाचारी, तथा अन्य सम्मानित व्यक्तियों ने सरदार पटेल के चरण स्पर्श किए और उनके शव पर फूल मालाएँ चढ़ाई गईं।

७ बजे चिता में आग दी गई। जनसमूह तथा नेताओं की आँखों से अश्रुधारा बह चली।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने दिवंगत नेता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

नेहरूजी से भी कुछ बोलने के लिए कहा गया किन्तु उनका हृदय इतना दु:खी हो रहा था कि वे अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में असमर्थ थे। उन्होंने इसके लिए क्षमा मांगी।

सरदार पटेल की मृत्यु से सम्पूर्ण देश शोक-संतप्त हो गया। सारे भारत में शोक मनाया गया। सरकारी झण्डे झुका दिए गए। सभी कार्यालय, बाजार तथा अन्य स्थान बन्द रहे। इस तरह भारत भूमि पर से एक महान देशभक्त उठ गया जिसको हम कभी नहीं भूल सकते।

सरदार पटेल का जीवन आने वाले नवयुवकों को एक नयी प्रेरणा देता है और उनमें नवजागरण उत्पन्न करता है। ऐसे नेता को देश कभी नहीं भूलेगा।